International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 269-272

मेघदूतम् का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कुमुद कुमार पाण्डेय
अतिथि अध्यापक, संस्कृत विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिकश्कृत कृति है इसमें कवि की प्रौढ़ कल्पना, उदात्तभावना, परिश्कृत शैली एवं कोमलकान्त पदावली का सामंजस्य दिखाई देता है यह कवि की कल्पना का मनोरम् प्रसून है अतएव विश्व के सभी सहृदयों ने इसकी मुक्तकण्ठ प्रषंसा की है यह गीतिकाव्य का उज्ज्वल माणिक्य है।[1]
संस्कृत साहित्य में कालिदास द्वारा लिखित मेघदूत ही स्वतन्त्र गीति काव्य की प्रथम सुव्यवस्थित रचना है। मेघदूत के अनन्तर यह परम्परा अबाध गति से प्रवाहित होकर अद्यावधि अक्षुण्ण धारा के रूप में चली आ रही है। मैकड़ोंनल ने मेघदूत को गीतिरत्न तथा हिरियात्रा ने महत्तम तथा सर्वश्रेश्ठ गीतिकाव्यों में से एक बताया है। कालिदास की इस कृति के सम्बन्ध में समीक्षकों की दृष्टि है.....मेघे माघे गतंवयः। मेघदूत में इतना पठनीय है कि उसके अध्ययन में ही मनुश्य की आयु बीत सकती है। इसका कथानक इतना रोचक है और परिणाम स्वरूप न पाठक ऊबता है और न मेघ।

मूल शब्दः जूआ, प्रेम, सामान्य न्याय, चोरी, आभूषण।

संस्कृत अलंकार के आचार्यों ने जिस प्रकार काव्य के स्वरूप प्रयोजन, हेतु आदि के विषय में सोपा तथा विषद विचार किया है, उसी प्रकार उन्होंने काव्य–भेद को भी अपने विमर्ष का विशय बनाया है साहित्य षास्त्र का पर्यवेक्षण करने पर ज्ञात होता है कि इसमें काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष को दृष्टिगत कर आचार्यों ने काव्यों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया है जिन्हें मोटे तौर पर निम्नलिखित छः आधारों पर निबद्ध किया जा सकता है–2

1. आकार की दृष्टि से
2. बन्ध की दृष्टि से
3. भाषा की दृष्टि से
4. अर्थ की रमणीयता की दृष्टि से
5. इन्द्रिय ग्रायता की दृष्टि से
6. वस्तु की दृष्टि से।

इन भेदों के अतिरिक्त काव्य एवं कोष नामक भेद का उल्लेख किया गया है–साहित्य दर्पण के अनुसार खण्डकाव्य का लक्षण निम्नालिक है–

खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यै क देषानुसारि च। यथा मेघदूतादि।3
अर्थात– खण्डकाय ''काव्य'' अथवा ''महाकाव्य'' के कतिपय लक्षणों से युक्त होता है जैसे–मेघदूत आदि।

मेघदूत का खण्डकाव्यत्व
मेघदूत संस्कृत साहित्य का सर्वोत्तम खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) है वस्तुतः उसी के द्वारा संस्कृत गीत काव्य का श्री गणेष भी होता है। उसमें खण्ड काव्य के लक्षण पूर्णतः घटित होते है यक्ष ने आषाढ़ मास के प्रथम दिन विरह वेदना से पीड़ित होकर मेघ को दूत बनाया था उसमें केवल एक रस विप्रलम्भ श्रृगार तथा एक ही छन्द मन्दाक्रान्ता की छटा है।4
अतएव यह एक खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) है आचार्य बलदेव उपाध्याय ने गीति काव्य कहे दो भेदों का वर्णन किया है–

1. प्रबन्ध काव्य
2. मुक्त काव्य

प्रवन्धात्मक गीतिकाव्य के अन्तर्गत ''मेघदूत''।

मेघदूत की कथावस्तु का मूल स्रोत

कालिदास के मेघदूत की कथा का मूलस्रोत क्या है इस विशय में विद्वानों में परस्पर मतभेद है कुछ विद्वानों के मतानुसार महाकवि कालिदास ने अपने जीवन में घटी किसी वियोग घटना के आधार पर मेघदूत की रचना की है।
विद्वान आलोचक हरिनाथ के अनुसार मेद्यदूत की कथा का आधार दूसरी शताब्दी कवि चीनी कवि ह्यूकान ने मेघ को दूत बनाने की कल्पना की थी उसी से प्रेरित होकर मेघदूत की रचना की गयी हो, परन्तु ई0पू0 प्रथम शताब्दी में कालिदास की स्थिति होने से उक्त बात निराधार हो जाती है। कुछ विद्वानों के अनुसार 'ब्रह्मवर्तपुराण' का वह प्रस मेघदूत की कथा कर आधार हो सकता है जिसमें कुबेर के द्वारा अपने सेवक हेममाली नामक यक्ष को प्रियतमा–प्रेम के कारण कर्तव्यपालन के अस्वधानी करतने के कारण एक वर्श के वियोग कालवधि के लिए षप्त कर दिया गया था।5 कथानक की दृष्टि से इसकी उपजीव्यता का श्रेय ब्रह्मवैवर्त पुराणस्थ योगिनी संज्ञक अषाढ़ कृष्णैकादषी कथा तथा रामायण है। परन्तु इस मत की उपयोगिता तभी सम्भव है ब्रह्मवैवर्त का स्थितिकाल पूर्व हो सम्भव है पुराणकार ने कही से अतिप्राचीन कथा का आश्रय लेकर उक्त बात कह हो। प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिना था मेघदूत की टीका मे–

''सीतां प्रति रामस्य हनूमत्सन्देष मनसि विधाय मेघदूत सन्देषं कविः कृतवानित्याहुः''[6]

कहकर वाल्मीकि रामायण में आई हुई राम का हनुमान द्वारा सीता को सन्देष पहुचाने वाली घटना को मेघदूत का बीज कहलाते है। और ''आहु'' कहकर यह भी घोशित करते है कि उनके समय में मेघदूत–विशय यह धारणा सर्वसाधारण थी।
मेघदूत में वर्णित निम्नालित प्रसन ऐसे है जिनसे रामकथा तथा तत्सम्बन्धी पात्रों घटनाओं से कालिदास का सुपरिचित होना सिद्ध होता है–

जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु।[7] रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।[8]
इत्याख्याते पवनतनयं मैथिली वोन्मुखी सा।[9]

कालिदास की कृतियों के पर्यालोचन से यह सहजतः प्रकाष में आ जाता है कि कालिदास ने अपने काव्यों में प्राचीन साहित्य रामायण पुराण आदि को दृश्टिगत अवष्य किया है महाकवि कालिदास ने मेघदूत की रचना में अपनी ही कल्पना वैभव तथा काव्य–प्रतिभा का सहाय लिया है।

मेघदूत का स्वरूप
मेघदूत का नामक कान्ता–विरह–विधुर यक्ष है। यक्षिणी नायिका है इसका एक मात्र रस विप्रलम्भ श्रृगार अपनी भव्य, ह्रदयावर्जक तथा चारूचित्त के साथ अति है यह सम्पूर्ण खण्डकाव्य एक ही दीर्घ छन्द 'मन्दाक्रान्ता' में निवद्ध है मेघदूत दो भागों में विभक्त है–

1. पूर्व मेघ
2. उत्तर मेघ।10

पूर्वमेघ की संक्षिप्त कथा

अल्कापुरी के स्वामी कुबेर ने अपना कार्य उत्तरदायित्व के साथ न निभाने के कारण एक यक्ष को शाप दिया कि वह एक वर्श तक अपनी पत्नी से वियुक्त होकर मर्त्यलोक मे निवास करे। वह षाप वस रामगिरी (मल्लि और बल्लभदेव ने भ्रमवष चित्रकूट को रामगिरी माना है प्रो0 विल्सन ने नागपुर के 24 मील उत्तर में स्थित रामटेक पर्वत को रामगिरी माना है आधुनिक पुरातत्व–अनुसंधान ने रामगिरी का सम्बन्ध मध्यप्रदेष के रामगढ़ स्थान से स्थापित किया है) पर्वत पर निवास करता है। षाप के लगभग 8 मास बीत जाते है आशाढ़ के प्रथम दिन उसे एक मेघ (बादल) दिखाई पड़ता है वह अपनी प्रिया के बिना अत्यन्त व्याकुल है अतः यह विचार किये बिना कि बादल उसका सन्देष ले जाने योग्य है या नहीं, वह उसे प्रिया की नगरी अलका तक का मार्ग बताता है और कहता है कि मालप्रदेश (मालवा), आम्रकूट पर्वत (अमरकण्टक), नर्मदानदी, विदिषा (भिलसा), नगरी, नीचौगिरी, निर्विन्ध्या नदी, उज्जयिनि, उज्जयिनि में महाकाल का मन्दिर और सिप्रा नदी, देवगिरी, चर्मण्वती नदी, कुरूक्षेत्र, सरस्वती नदी, कनखल, गंगानदी, हिमाचल पर्वत कौंच रन्ध्र (नीति माणादर्रा) कैलाष और अलका नगरी।11

उत्तर मेघ की संक्षिप्त कथा

हे मेघ, तुम्हे अलका में गगनचुम्बी प्रसाद मिलेगे। वहां सदा सुख, वैभव, आनन्द और विलास है वहां कुबेर का प्रसाद है उसके उत्तर में मेरा घर है वहाँ मेरी विरहिणी प्रियतमा के देखोगे। वह षोक से खिन्न, मलिन, उदास कृशगात्र और तुशार पात्र से म्लान पद्मिनी के तुल्य दिखायी पड़ेगी, उससे मेरा सन्देष कहना कि तुम खिन्न न हो वियोग के शेश चार मास धैर्य से विताना। सुख के दिन शीघ्र से आने वाले है मै भी किसी प्रकार के दुःख के काट रहा हूँ। दुःख–सुख का चक्र बदलता रहता है। वियोग के दिन पूरे होन ही षीघ्र मिलन होगा।[12]

मेघदूत के पाठ (श्लोक संख्या)

स्वल्प काय होते हुए भी मेघदूत ने अपने काव्य चारूत्व, कल्पना वैषिश्टय तथा काव्यषिल्प के कारण जो लोक प्रियता और प्रसिद्धि प्राप्त की वह सर्वथा उल्लेखनीय है।

पाठः

इस समय मेघदूत में जितने पाठ प्राप्त है उसमें मेघदूत की सही ष्लोक संख्या भी मत भेद के कारागार में निबद्ध है मेघदूत की विभिन्न पाण्डुलिपियां भारतीय पुस्तकालयों के अतिरिक्त नेपाल, इग्लैण्ड, जर्मनी, प्रभृति देशों के पुस्तकालयों में रखी गयी है प्रसिद्ध विद्वान एस0के0के0 के अनुसार वास्तविक पाठ–निर्धारण के लिए मूल–पाठ वाली पाण्डुलिपियों की अपेक्षा टीका सहित पाण्डुलिपियों की अधिक उपयोगिता है आठवी शताब्दी की रचना भीमसेनकृत पार्षाभ्युदय के प्रत्येक ष्लोक के चतुर्थ चरण में मेघदूत के ष्लोकों की एक–एक पक्ति निविश्ट है पार्श्वाभ्युदय के अनुसार ष्लोकों की संख्या 120 है उसमें प्रक्षिप्त माने जाने वाले 9 श्लोक भी परिगणित है, जिनमें से पांच ष्लोक प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ की दृश्टि से भी प्रक्षिप्त है।[13]

प्रसिद्ध विद्वान जिन सेन के अनुसार मेघदूत में प्रक्षिप्त श्लोक सम्मलित हो गये थे प्राचीनतम कश्मीरी टीकाकार बल्लभदेव के अनुसार मेघदूत की ष्लोक संख्या 111 है। यद्यपि उनकी टीका में 112 श्लोक है परन्तु वे एक श्लोक प्रक्षिप्त मानते है टीकाकार स्थिरदेव की टीका में 111 श्लोक है।[14]

दक्षिणावर्त, पूर्णसरस्वती तथा परमेश्वर की टीका में 110 श्लोक है इन टीकाकारों ने उत्तमेघ के 111 ष्लोकों को छोड़ दिया पाश्चात्य विद्वान मैक्डानल ने मेघदूत की श्लोक संख्या 111 मानी है। प्रसिद्ध टीकारकार मल्लिनाथ ने अपनी संजीवनी टीका में श्लोक संख्या 121 मानी है उनमें से प्रक्षिप्त श्लोकों को हटाने पर वह संख्या 115 रह जाती है।[15]

इसी प्रकार मेघदूत के मकरन्दमिश्र, रामनाथतर्कालङ्कार, श्षश्वत सनातन गोस्वामी, कल्याणमल, कविरल चक्रवर्ती, हरगोविन्द वाचख्याति, भगीरथमिश्र, प्रभृति विद्वानों के द्वारा निर्दिश्ट श्लोक संख्या में परस्पर भेद है। डॉ0 एस0के0डे0 ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और जे0हेल्टर आदि ने क्रमषः 110 या 111, 65+11 तथा 108 मानी है।[16]

मेघदूत के टीकाकार

यद्यपि मेघदूत की 40 से भी अधिक टीकाएं उपलब्ध है परन्तु निम्नलिखित टीकाकारों की टीकाएं अतिप्रसिद्ध है।[17]

1. वल्लभ
2. मल्लिनाथ
3. सारोद्धारिणी
4. सरस्वती तीर्थ
5. सुमित विजय
6. महिम सिंघानी

मेघदूत की शैली

मेघदूत कालिदास के हृदय का सरस–नित्यन्द है। यह संस्कृत के गीति–काव्य का मुकुटमणि है इसमें भावों की गरिमा, विचारों की महिमा, कल्पना की कामनीयता, हृदय की विषदता, भाशा का प्राजंलता, भाशा की मधुरिमा, विप्रलंभ श्रृंगार की सात्विकता है।

भाषा–सौष्ठव

कालिदास की भाषा में प्रसाद और माधूर्य के साथ संगीतात्मक भी है इसमें हृदय की वीणा–तन्त्री सी झंकृत होती जाती है इसमें भाशा की संगीतात्मकता के साथ ही दोनों प्रेमियों के मिलन का काल्पनिक चित्र भी प्रस्तुत किया गया है मन्द–मन्द, चातक की मधुर ध्वनि और सुभग वक–पंक्ति मेघ के लिए शुभ शकुन है। मन्द पवन और मन्दाक्रान्ता छन्द का क्या सुन्दर तालमेल बिठाया गया है–

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चयानुकूलों यथा त्वां।
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।।[18]

भाषाभिव्यक्ति

कवि ने एक ओर कलापक्ष की उदात्ता के कारण कविता कामिनी का वाह्य श्रृंगार किया है तो दूसरी ओर मनोभावों की मार्मिक विवेचना के द्वारा भावपक्ष को उससे अधिक संतुष्ट किया है। मार्ग में पड़ी हुई निर्विध्या नदी मेघ की प्रेयसी है उसकी मेखला पक्षियों के कलख के रूप में नाद कर रही है भंवर के रूप में उनकी नाभि दिखाई पड़ रही है स्त्रियों के हाव–भाव ही प्रेम

भिव्यक्ति के पूर्वरूप होते है अतः हे मेघ, उसे प्यार करते हुए आगे बढ़ना–

वीचिक्षोभस्तनितविगहश्रेणिका≺चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः संनिपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमों हि प्रियेषु।।[19]

विरही यक्ष को ज्ञात है कि सन्देष व्यक्तियों के द्वारा भेजे जाते है मेघ प्राणी नहीं है वह तो धूम, ज्योति, जल और वायु का संघात है फिर भी यक्ष का सन्देश ही ले जाना है, भाव–विह्वल कामी व्यक्ति चेतन और अचेतन में अन्तर नहीं करता। उसकी भावना इतनी प्रदीप्त है कि उसे सूक्ष्म तरंगे स्वयं प्रिया के पास पहुंचा देगी, मेघ तो नाममात्र के लिए दूत है कवि की उद्दीप्त भावप्रधानता है–

धूमज्योतिः सलिलमरूतां संनिपातः क्वमेघः
सन्देषार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिणगयन् गृ↑कस्त ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतुनेषु।।[20]

मेघदूत का काव्य–सौन्दर्य

कालिदास ने अपनी सभी रचनाओं में अलंकार योजना का यथाशक्ति स्थान दिया है उनके अलंकारों में स्वाभाविकता, सौन्दर्योत्पादकता तथा वर्णाविशय की विम्बग्राहिता है।

मेघदूत में अनुप्रास आदि शब्दोल◺ारों के साथ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास आदि अल◺ारों को विषेश स्थान मिला है कालिदास की सर्वषांसित औपम्य विधान इस काव्य में चरम उत्कर्श को प्राप्त है काव्य में अनेकत्व उपमा का सौन्दर्य देखते ही बनता है–उपमा का एक चित्ताकर्शक चित दर्षनीय है–

तत्योत्सप्े प्रणयिन इव स्रस्तगण्दुकूलां
न त्वं दृष्टवा पुनरलकां ज्ञास्यसे कामाचारिन्।
या वः काले वहति सालिलोदगारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालप्रथितमलकं कामिनी वाभ्रवृन्दम।।[21]

कैलाष पर्वत की गोद में अलकापुरी का वर्णन करता हुआ यक्ष कहता है कि हे मेघ! प्रेमी के समान उस (कैलाषपर्वत) की गोद में खिसके हुए गण् के समान श्वेत दुपट्टे वाली, अलका(पुरी) को देखकर तुम न जान सकोगे (ऐसा) नही है ऊँचे सात मि≺जल भवनों वाली जो (अलकापुरी) तुम्हारे समय (वर्शाकाल) में जल वरसाने के गुच्छे को, (वैसे ही धारण करती है) जैसे स्त्री मोतियों के गुच्छे से गूंथे हुए केशों को धारण करती है।

इस ष्लोक में कैलास की प्रेमी से, अलका की कामिनी से गण् की ष्वेत वस्त्र से, सलिल की मोतियों से और अभ्रवृन्द (बादल) की अलका (बाल) से समता दिखाई गयी है इसलिए यहां समस्त वस्तु विशयक उपमा है और वह उत्सप्, गण्दुकूल और विमान में ष्लेश होने से ष्लेशानुप्रामणित है।

यह औपम्य विधान का सर्वातिषायी उदाहरण है।[22]

छन्दोविधान

विधानतः, वर्शा, प्रवास, विपत्ति आदि के वर्णन के लिए मन्दाक्रान्ता छन्द उपयुक्त है सम्पूर्ण मेघदूत में केवल ''मन्दाक्रान्ता'' छन्द का प्रयोग हुआ है यह छन्द विपलम्भ–श्रृंगार के सर्वथा अनुकूल है यक्ष के द्वारा दुःखपूर्वक अपने हार्दिक षोकोद्गार प्रकट करने के अवसर पर यह छन्द तद्नुकूल वृत्ति की सृश्टि करता है इस प्रकार कवि ने गीतिकाव्य के अनुरूप ''मन्दक्रान्ता'' छन्द का प्रयोग कर मेघदूत खण्डकाव्य को अत्यन्त अह्लादक बना दिया है।[23]

रसभाव योजना

महाकवि कालिदास रससिद्ध कवि है रस काव्य का प्राणतत्त्व माना गया है कविराज विष्वनाथ ने ''वाक्य रसात्मकं काव्यम्''[24] लिखकर रस की महत्ता को प्रतिपादित किया है इस व्यापार के सफल होने के कारण ही महाकवि कालिदास को कविता–बनिता का विलास कहा गया है।

संभोगश्रृगार

यद्यपि मेघदूत में विप्रलम्भ श्रृगार प्रधान है परन्तु मेघ से सजीव दूत के रूप में चित्रण से कवि को संयोग श्रृगार का भी वर्णन करने का अवसर मिल गया है मेघ की प्रेयसी नदियां जहां भी मिल जाती है वह वहां रम जाता है और सम्भोग श्रृगार का रसास्वाद करता है कवि अपनी कल्पना से जंगल में भी मंगल कर देता है– विदिषा में वेत्रवती नदी का जलपान मेंघ के लिए भूभंगयुक्त कामिनी के अधरपान के तुल्य है–

तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मात्।
सभ्रूभं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि।।[25]

विप्रलम्भ श्रृगार

विप्रलम्भ श्रृगार मेघदूत का मुख्य प्रतिपाघ विशय है डॉ कीथ ने मेघदूत को षोक–गीत की कोटि में डालना उचित समझा है[26] मेघदूत षोक–गीत या करूण–गीत ने होकर विरह गीत या विप्रलम्भ गीत है–षोकगीत मृत के लिए होता है यक्षिणी जीवित है–यक्षिणी विरह–व्यथा से निर्वल है और शय्या पर उसी प्रकार कृष–गात्र पड़ी रहती है जैसे पूर्व दिषा में कृष–गात्र पडी रहती है जैसे पूर्व दिषा में कृश्णपक्ष में क्षीण चन्द्रकला।

आधिक्षामां विरहशयेन संनिश्णैकपार्ष्वां।
प्राचीनमूले तनुमिव कलामात्रषेशां हिमांषोः।।[27]

यक्षिणी विरहणी चकवी के तुल्य षोकविधुरा और खिन्न होगी, वह पाले से मरी हुई पधिनी के तुल्य क्षीणकान्ति होगी, (2–23)। अत्यधिक रोने से उसकी आंखे सूजी हुई होंगी। ओश्ठ फीके होंगे और मुख पर बाल पड़े होंगे वह मेघवृत चन्द्र के तुल्य कान्तिरहित होगी, (2–24)। वह कभी वीणा बजाती होगी पर बीच में ही आसू आ जाने से आरोह–अवरोह भूल जाती होगी (2–26)। कभी फूल गिनकर विरह–दिवस की समाप्ति गिनती होगी और कल्पना द्वारा मेरे संभोग का रसास्वाद करती होगी।

प्रकृतिवर्णन

मेघदूत में प्रकृति केवल दृष्य प्रकृति न होकर मानवीय, भावों, विचारों और अनुभूतियों से सम्पन्न एक अभिनेत्री है जो अपने छात्र–भाव, लास्य प्रणय–व्यापार और कमनीयता से कभी सहृदयों को आकृष्ट करती है मेघ चेतन दूत से अधिक सक्रिय, रसिक, स्नेही, आज्ञाकारी और प्रत्युपन्नमति है वह समयानुसार गरजता है, बरसता है, दावाग्नि को षान्त करता है (1–18), पानी पीता है (1–20) नदियों से क्रीडा करता है (1–25), श्रमबिन्दुओं को हरता है (1–27), स्त्रियों के साथ प्रेम केलि करता है(1–28), महाकाल के आरती के समय गर्जना करता है (1–38) और षिव–पार्वती के विहार के समय सघन होकर सीढी का काम करता है (1–64), कवि का प्रकृति से रागात्मक सम्बन्ध है–हे मेघ, तुम षिव जी के नृत्य के समय उनकी सहायता करना। उनकी हस्ति वर्म ओढ़ने की इच्छा को पूर्ण करना। तुम्हे पार्वती भावविहवल दृष्टि से देखेगी।

नृत्यारम्भे हर पषुपतेरार्द्र नागाजिनेच्छां।
षान्तोद्वेगस्तिमितनयनं दृष्टीाक्तिर्भवान्या।।[28]

प्रेमसौन्दर्य

पूर्वमेघ में रतिभाव के जितने संप्रेत हुये है उनमें से कोई भी भौतिक या ऐन्द्रिक वासना के ऊपर नही उठ सका है परन्तु उत्तर मेघ में ऐन्द्रियिक वासना के साथ–साथ आध्यात्मिक प्रेम के भी संप्रेत मिलते है अलका पुरी के वर्णन में जहां यक्षों के उत्तम स्त्रियों के साथ मधुपान अथवा देवाप्नाओं के प्रसाधन तथा उपयोग में ऐन्द्रियिक वासना की अभिव्यक्ति हुयी है।

कालिदास ने यक्ष और उसकी प्रिया का प्रतीक के प्रणय की एकनिश्ठता से सचमुच मानव के लिए आदर्ष प्रेम का प्रतीक सीिवत किया है कालिदास के अन्य काव्यों की भांति मेघदूत में भी हमें यह अमर सन्देष मिलता है कि षारीरिक सौन्दर्य एवं भौतिक वासना पर आधारित प्रेम नष्वर एवं क्षणिक है वह कभी भी आह्दक तथा षान्तिप्रद नहीं होता। परस्पर समर्पण, त्याग एवं कर्तव्य की भावना ही प्रेम को अनष्वर एवं दिव्य बनाती है।[29]

मेघदूत का दार्षनिक पक्ष

डॉ वासुदेवषरण अग्रवाल ने मेघदूत के दार्षनिक पक्ष का विवेचन किया है[30] मेघकाम है (कामरूपं मघोनः 1–6) काम का दमन करने पर ही षिवत्व की प्राप्ति होती है अतएव पूर्व मेघ 37 से 40, 59–60 ष्लोकों में महाकाल गण, नीलकण्ठ चण्डीष्वर, पषुपति, भवानी आदि का उल्लेख है। उपर्युक्त ष्लोकों में स्पश्ट किया गया है कि मेघ (काम) षिव की भक्ति में संलग्न हो षाष्व सिद्धैरूपचितबर्लि भक्तिनम्रः परीयाः (1–59)। षिव की भक्ति से ही कामी का काम षान्त होता है और ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। अतः डॉ0 अग्रवाल का कथन है– षिव, विष्णु और ब्रह्मा के अद्वैतभाव, षिव और कूटस्थ आत्मा का तादात्म्य और योग द्वारा उस अक्षर–ब्रह्म का साक्षात्कार ही कालिदास का दार्षनिक मत है।

मेघदूत की लोकप्रिय

मेघदूत में भाव प्रवणता, कल्पना मनोज्ञता, भाषा सौश्ठव रसाभिव्यक्ति, प्रणयानुभूति, विरहवेदना, मर्मिकता, कोमलता, मनोहरता और प्रा≺जलता–गुणों ने उसे इतना लोकप्रिय बनाया है कि इस पर 50 से अधिक संस्कृत टीकाएं हुई। हिन्दी, मराठी, गुजराती बंगला, तेलगु, तमिल, मलयालम् और उर्दू आदि मे इसके अनेक अनुवाद हुए। हिन्दी में 6 पद्यानुवाद हो चुके है। 8वीं षताब्दी ई0 में जैन कवि जिनसेन कृत पार्ष्वाभ्युदय, विक्रम कविकृत नेमिदूत, धोयीकृत पवनदूत आदि काव्य हो चुके है।

संस्कृत–साहित्य में मेघदूत का स्थान

कालिदास की लोकप्रिय एवं महनीय कृति मेघदूत कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हे। मेघदूत में प्राकृति सौन्दर्य के यत्र–तत्र जो विम्ब है और प्रकृति परिवार की सभी सदस्य जिस प्रकार विरह–विधुर यक्ष के साथ समवेदना व्यक्त करते है उससे समस्त मेघदूत मानव और प्रकृति के अटूट साहचर्य का समुज्जवल आश्रय सा बन गया है यही नही, मेघदूत की इस विषेशताओं की भी दृष्टि से ओझल नही किया जा सकता कि उसने संस्कृत में दूतकाव्यों की सर्जना के लिए कवियों के हृदय में ऐसी प्रेरणा प्रदान कर दी कि जिसके कारण मेघदूत के परवर्ती काल में दूतकाव्यों की परम्परा सी बन गयी। इस दृष्टि से भी मेघदूत संस्कृत साहित्य में अत्युच्च स्थान का भागी है।

निष्कर्श

मेघदूत संस्कृत साहित्य का सर्वोत्तम खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) है। वस्तुतः उसी के द्वारा संस्कृत गीतिकाव्य का श्री गणेष भी होता है उसमें खण्डकाव्य के लक्षण पूर्णतः घटित होते है।

सारांश

मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत कृति है इसमें कवि की प्रौढ़कल्पना, उदात्त भावना, परिष्कृत षैली एवं कोमलकान्त पदावली का सामंजस्य दिखाई देता है यह कवि की कल्पना का मनोरम प्रसून है अतएव विष्व के सभी सहृदयों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रषंसा की है यह गीतिकाव्य का उज्ज्वल माणिक्य है इसमें विरही यक्ष का वर्णन है वह मेघ के द्वारा अपनी प्रिया यक्षिणी को सन्देष भेजता है पूर्वमेघ में रामगिरी से लेकर अलका तक मार्ग बताया गया है और उत्तर मेघ में प्रिया के लिए सन्देष है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास (डॉ कपिदेव द्विवेदी), पृ0 526
2. संस्कृत साहित्य का परिचात्मक एव समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 104
3. संस्कृत साहित्य दर्पण– 6/329
4. संस्कृत साहित्य का परिचात्मक एवं समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 105
5. वही, पृ0 106
6. वही
7. पूर्व मेघ, 1/1
8. वही 1/12
9. उत्तरमेघ, 40
10. संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक एवं समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 106
11. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास (डॉ0 कपिदेव द्विवेदी), पृ0 528
12. वही, पृ0 529
13. संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक एवं समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 110
14. वही,
15. वही,
16. वही,
17. वही,
18. मेघदूत, 1/10
19. मेघदूत, 1/29
20. मेघदूत, 1/5
21. वही, 1/65
22. संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक एवं समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 112
23. वही
24. वही
25. मेघदूतम्, 1/25
26. डॉ0 कीथ (एच0एस0एल0), पृ0 87
27. मेघदूत, 2/31
28. वही, 1/40
29. संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक एवं समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 11
30. मेघदूत का अध्ययन : षिव का स्वरूप